अज्ञेय की रचनाधर्मिता

संपादक :
डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

ISBN : 978-93-91515-02-7

© संपादक

प्रकाशक : **मनीष पब्लिकेशन्स**
ए-471/10, पार्ट द्वितीय, ए-ब्लाक
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
मो. नं. 9968762953
email : manishpublications@gmail.com

मूल्य : 600.00 रुपये

प्रथम संस्करण : 2021

शब्द-संयोजन : ज्योति एन्टरप्राइज़ेज, शाहदरा, दिल्ली-110032

आवरण : अमित

मुद्रक : पूजा ऑफसेट, शाहदरा, दिल्ली-110032

AGYEY KI RACHNADHARMITA
by Surendra Sharma

अनुक्रम

1. अज्ञेय के कथा-साहित्य में आधुनिक भाव-बोध से उपजे मूल्य 15
–डॉ. सुरेन्द्र शर्मा
2. अज्ञेय काव्य में गीति तत्त्व 31
–डॉ. ओम प्रकाश सैनी (डी. लिट्)
3. अज्ञेय की औपन्यासिक गद्य शैली 39
–डॉ. श्रीप्रकाश यादव
4. अज्ञेय का अस्तित्ववादी दर्शन : काव्य एवं उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में 47
–डॉ. प्रवीण ठाकुर
5. अज्ञेय के कथा-साहित्य में शिल्प विधान 56
–डॉ. सुरेन्द्र शर्मा
6. आस्था और समर्पण के कवि-'अज्ञेय' 69
–डॉ. हरप्रीत कौर
7. अज्ञेय के काव्य में पाश्चात्य प्रभाव 77
–डॉ. प्रभात कुमार 'प्रभाकर'
8. अज्ञेय की सामाजिक दृष्टि 90
–डॉ. सुरेन्द्र शर्मा
9. अज्ञेय की कहानियों में मनोवैज्ञानिकता 96
–डॉ. जगदीश कैंथला
10. अज्ञेय के काव्य में व्यष्टि और समष्टि का समन्वय 105
–डॉ. हिमेन्द्र पाल काशव
11. अज्ञेय की काव्य भाषा एवं शिल्प 112
डॉ. मौसम कुमार ठाकुर
12. अज्ञेय के काव्य में बौद्ध दर्शन और वर्तमान संदर्भ 121
–वीरेंद्र कुमार ठाकुर
13. अज्ञेय के उपन्यास साहित्य का वैशिष्ट्य 129
–डॉ. ममता
14. अज्ञेय और आधुनिकता 140
–रुद्र चरण माझी

अज्ञेय काव्य में गीति तत्त्व

डॉ. ओम प्रकाश सैनी (डी. लिट्)
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
आर.के. एस. डी. (पी. जी.) कॉलेज,
कैथल, हरियाणा।

"यह जन है, गाता गीत जिन्हें फिर और कौन गायेगा?
पनडुब्बा : ये मोती सच्चे फिर कौन कृति लायेगा?"[1]

अज्ञेय की कविता 'यह दीप अकेला' की इन पंक्तियों में आये 'गीत' शब्द को पढकर प्रश्न जगता है कि क्या अज्ञेय एक सफल गीतकार हैं...? प्रस्तुत शोध आलेख उसी जिज्ञासा की पूर्ति है। हिंदी काव्य संसार में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' अपनी अद्‌भुत प्रयोगात्मक शक्ति से प्रज्ज्वलित दीपस्तंभ बनकर प्रतिष्ठित है। अज्ञेय ने हिंदी काव्य को नवीन उपमान, प्रतीक, बिम्ब, भाषा एवं छंद देकर उच्च पद पर आसीन किया। यह सर्वविदित है कि अज्ञेय ने अपनी 'यायावरी' प्रवृत्ति के कारण किसी महाकाव्य अथवा खंडकाव्य की रचना नहीं की फिर भी छायावादी कवियों की भाँति प्रकारांतर से वे गीत-प्रगीत रचने में लीन रहे। अज्ञेय एक सफल गीतकार हैं इसमें कोई संदेह नही। अज्ञेय में भारतीय ग्रामीण परिवेश की ठेठ लोकधुन और पश्चिमी गीतों की छंदबद्ध ताल का अद्‌भुत मिश्रण है। अज्ञेय काव्य की गीति योजना को जानने से पहले 'गीत' और 'प्रगीत' के बीच अंतर समझना अभीष्ट है। गीत और प्रगीत में सबसे बड़ा अंतर यही है कि गीतों में शास्त्र सम्मत तुक छंद संबंधित नियमों का पालन किया जाता है जबकि प्रगीत मुक्तक इन नियमों के दायरे से बहुत कुछ मुक्त होते हैं। हम कहें कि गीतों से अभिप्रायः काव्य रूढ़ियों से बंधे हुए ढाँचे से है। रीतिकालीन कवियों द्वारा रचे गए मुक्तक इसी कोटि में आते हैं। वही आधुनिक काल में कवियों ने रूढ़िगत बंधन को नकार स्वच्छंद रीति से जिस गेय परंपरा को अपनाया आधुनिक काल में साहित्यकों ने उसे ही 'प्रगीत' कहकर संबोधित किया। इसी आधार पर आचार्य शुक्ल ने रीतिकालीन मुक्तकों और आधुनिक मुक्तकों के बीच अंतर स्पष्ट करते हुए उन्हें क्रमशः 'गीत' और 'प्रगीत'